# *हिंदी साहित्य को असग़र वजाहत का योगदान*

**प्रो. ज़ोहरा अफ़ज़ल**

**शाज़िया बशीर**

असग़र वजाहत उन बिरले लेखकों में हैं जिन्होंने अपनी कलम का जादू हिंदी साहित्य की प्रत्येक विधा जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक, नुक्कड़ नाटक, यात्रावृत्तांत, असंख्य वृत्तचित्र, टेलीविजन लेखन, फिल्म एवं पटकथाएँ आदि पर चलाया| खैर साहित्य की ऐसी कोई विधा ही नहीं है जिस पर असग़र वजाहत का अधिकार न हो| उन्होंने हिंदी साहित्य को ऐसी रचनाएँ भेंट की जिन पर साहित्य एवं पाठक आजीवन गर्व महसूस करेंगे| उन्होंने अपने रचनात्मक कौशल को हिंदी तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि देश-विदेश की भाषाओं पर भी अपनी लेखनी से न सिर्फ अपनी पहचान बनायीं बल्कि नाम भी कमाया | असग़र वजाहत ने डॉ.कार्लो कपोला,डॉ. स्टीव पूलस तथा डॉ. मारिया नेज्यैशी की सहायता से हिंदी रचनाओं का अंग्रेज़ी तथा हंगेरियन भाषाओं में अनुवाद कर के प्रकशन कराया और क़ुर्रतुलएन हैदर के उर्दू उपन्यास 'आखिरीशब के हमसफ़र' का 'निशांत के सहयात्री ' नाम से हिंदी रूपांतर कर ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित कराया | हिंदी साहित्य में असग़र वजाहतका का योगदान ढूँढना दोनों असग़र वजाहत के रचना-संसार एवं हिंदी साहित्य के लिए पानी पानी कर देनी वाली बात सी है फिर भी हिंदी साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में इनकी लेखनी की सराहना एवं इनकी सोच का सम्मानकरना हर पाठक का कर्तव्य है|

असग़र वजाहत ने अपनी लेखनी का आरम्भ छात्र जीवन में ही एक कविता लेखक के रूप में किया था और फिर अन्य विधाओं में भी अपने पंख ऐसे फैलाए कि पढ़ने वालों में भी उड़ान का हौसला और हिम्मत भरते चले गए|

स्वन्तन्त्रोत्तर हिंदी कहानी साहित्य को जिन रचनाकारों ने अपनी सार्थक रचनाकार्य  द्वारा व्यापक फ़लक प्रदान करने में सहायता की,उनमें असग़र वजाहत का एक महत्वपूर्ण स्थान है|उन्होंने विभाजन की त्रासदी के साथ-साथ मानवीय मूल्यों के ह्रास एवं हनन, कला और साहित्य के क्षेत्र में बढ़ते राजनीतिक हस्तक्षेप, निम्न और मध्यवर्गीय जीवन के संघर्ष को पूरी जीवंतता के साथ अपनी कहानियों में चित्रित किया है| उनकी कहानियों में भारतीय जन-जीवन अपने पूरे परिवेश के साथ भिन्न-भिन्न सन्दर्भों में उभरकर सामने आया है|

**कहानीकार के रूप में :**

सठोत्तरी कहानी के अन्य रचनाकारों की भांति असग़र वजाहत ने भी अपना कथा-परिवेश का केंद्र अधिकतरमध्यवर्ग के जीवन को बनाया| उनके समकालीन कहानीकारों के यहाँ मध्यवर्ग के उच्च मध्यवर्गीय और निम्न मध्यवर्गीय दोनों वर्गों और उनके अत्यंत सूक्षम स्तरों की विविधता और सूक्ष्मदर्शिता प्रायः दुष्प्राप्य है|मगर असग़र वजाहत की कहानियों में यह सारे तत्व मौजूद हैं| उनके कहानी-संग्रहों में 'दिल्ली पहुँचना है', 'स्विमिंग पूल', 'सब कहाँ कुछ' और 'मैं हिन्दू हूँ' सामान्य व्यक्ति की ज़िन्दगी का प्रमाणिक दस्तावेज़ प्रस्तुत करने में पूर्ण रूप से सक्षम हैं|

असग़र वजाहत अपनी निजी ज़िन्दगी में सरलता को प्रमुखता देने वाले कथाकार हैं|वह किसी भी प्रकार के बनावटीपन, बड़बोलापन एवं अतिश्योक्ति आदि से व्यक्तिगत जीवन में भी चिढ़ते हैं और यही प्रवृत्ति परिवर्तित होकर उनकी कहानियों में भी प्रयुक्त है| उन्होंने अधिकतर साम्प्रदायवाद और उससे जुड़े तत्ववाद पर खुलकर एवं पर्याप्त कटुता के साथ लिखा है| उन्होंने मुस्लिम सम्प्रदायवाद पर अधिक बहस की है और गैर-सांप्रदायिक व धर्म-निराश्रित लेखक का कर्तव्य है कि वह पहले अपने वर्ग एवं अपने तबके के लोगों को देखे| अगर प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने सम्प्रदाय पर इसी प्रकार विशेष ध्यान केन्द्रित करेगा तो

धीरे-धीरे साम्प्रदायिकता को फैलाने एवं हवा देने के पीछे छुपी गन्दी एवं घिनौनी मानसिकता का उन्मूलन संभव है| उनकी इसी प्रवृति के कारण उन्हें समय-समय पर मुसलमान लेखक का टैग देने के असफल प्रयास भी किये गए हैं|2004 में लखनऊ में आयोजित कथाक्रम सम्मान के दौरान हिंदी के मशहूर लेखक राजेंद्र यादव ने असग़र वजाहत को मुसलमान लेखक के नाम से संबोधित किया था| धर्म चाहे कुछ भी हो, यह तथ्य नाभिनालबद्ध है कि असग़र वजाहत हिंदी भाषा के सफल एवं सार्थक लेखक होने के साथ-साथ भारत देश के नागरिक हैं|

**नाटककार के रूप में :**

असग़र वजाहत के सफल नाटककार ही नहीं बल्कि एक कुशल रंगकर्मी भी हैं| उन्होंने हिंदी नाट्य-सहिय को 'फिरंगी लौट आए', 'इन्ना की आवाज़', 'वीरगति', 'सबसे सस्ता गोश्त', 'जिन लाहौर नहीं वेख्या वो जन्मियाई नाहि' और 'गोडसे @गाँधी,कॉम' जैसी सफल एवं सार्थक रचनाएँ भेंट की हैं जिनका देश-विदेश मेंसफलतापूर्वक मंचन हो चूका है| वह अपने नाट्य-लेखन से स्वयं कुछ ख़ास संतुष्ट नहीं दिखाई देते| वह 25 मई 2008 को नवभारत टाइम्स में लिखित अपने लेख 'नाट्य-लेखन को समर्पित नहीं है' में लिखते हैं "हिंदी लेखन की प्रतिभा जो कहानी,उपन्यास,संस्मरण लेखन के क्षेत्रों में दिखाई पड़ती है वह नाटक में नज़र नहीं आती|" उनके इस कथन से उनका तात्पर्य है कि हिंदी की श्रेष्ठ बुद्धिवैभव का लाभ जो अन्य विधाओं को प्राप्त है वो नाटक को नहीं है|इसका कारण वो उन विशेष परिस्थितियों को मानते हैं जिनके आभाव में किन्ही जीवंत एवं मंचानुकूल नाटकों की रचना संभव नहीं है| उनका मानना है कि अच्छे नाटक लेखन की पूरी प्रक्रिया मंच की लोकतान्त्रिक अवधारणा से मेल खाती है और हमारे देश की व्यवसायिक रंग मंडलियाँ इतनी सशक्त नहीं हैं कि नाटककार अपने से चुन सकें| ऐसी परिस्थितियों में नाटककार और रंगमंच के बीच की दूरी लगातार बढ़ रही है| एक

अन्य समस्या वह मौलिक हिंदी नाटकों का प्राय: कम मंचन मानते हैं| नाटक दरअसल रंगमंच को ध्यान में रखकर लिखा जाता है और मौलिक नाटकों का मंचीकरण न हो पाना नाटककारों को हतोत्साहित करता है| रंगमंच को ध्यान में रखकर असग़र वजाहत का नाटक 'जिन लाहौर नहीं वेख्या' हिंदी नाट्य साहित्य में मील का पत्थर सिद्द हुआ है|इस नाटक की देश-विदेश में अनेक प्रस्तुतियां हुई हैं और सीमा से बाहर लोगों ने भी इसे उतना ही सराहा जितना सीमा के भीतर लोगों ने| अपने विचारों एवं भावनाओं को साहित्य की सशक्त विधाओं द्वारा लोगों तक पहुंचाना असग़र वजाहत की एक निपुण कला है|

**उपन्यासकार के रूप में :**

एक उपन्यासकार के रूप में असग़र वजाहत ने जीवन के यथार्थ को इस तरह चित्रित करते हैं कि उससे जीवन और समाज का मानवीय सम्बन्ध टी होता है| प्रेमचंदोत्तर सामजिक यथार्थ को चित्रित करने का दायित्व जिस प्रकार इन्होंने निभाया उतना किसी और साहित्यकार ने नहीं| प्रेमचंद के पश्चात सामाजिक यथार्थ की उनकी कथा-परंपरा को रचना तथा विचार दोनों स्तरों पर अपने समय- संदर्भों में नए विचारों, तेवरों एवं सामाजिक यथार्थ के नए विवक्षा में विकसित करने वाले कथाकारों में असग़र वजाहत का नाम सर्वोपरि हैं| असग़र वजाहत के कथा-मन को श्री सरवेश्वर दयाल सक्सेना ने परखने की कोशिश की है| उनके शब्दों में-" असग़र वजाहत में प्रेमचंद और मंटो का सुखद मिश्रण है| यदि वह प्रेमचंद की तरह अपनी धरती से और गहराई से जुड़ सके, मंटो की तरह सामजिक चीरफाड़ में एक सर्जक की तरह एक स्तर पर निर्मम और दूसरे स्तर पर मानवीय करुणा से भाषा की कैंची संभल सके तो हिंदी कहानी को बहुमूल्य योग दे सकेंगे|"[1]

---

[1]सर्वेश्वरदयाल सक्सेना-सम्पूर्ण गद्य रचनाएँ-खंड ३-प्रष्ठ १२०-१२१

असग़र वजाहत के उपन्यासों में भारतीय जीवन के बदलते परिवेश, सामजिक संघर्ष, आर्थिक आभाव,मानवीय मूल्यों का हनन, नैतिक मूल्यों का दमन, राजनीतज्ञों द्वारा किये जाने वाले भ्रष्ठाचार एवं शोषण, महानगर की आपाधापी में जन्मा वैचारिक संघर्ष, छात्र जीवन से जुडी समस्याएँ आदि समस्याओं के अतिरिक्त फ़िल्मी दुनिया से जुडी अनेक प्रकार की समस्याओं को उजागर किया है| असग़र वजाहत उपन्यासकार के रूप में अधिक सफल हुए हैं| उन्होंने छात्र जीवन से जुडी समस्याओं विशेषकर माता-पिता की आशाओं को पूरा करने में असमर्थ बच्चों को किस प्रकार अपनी निजी ज़िन्दगी में निराशा से जूझना पड़ता है इसका प्रमाण 'कैसी आगी लगाई' का साजिद है जो माता-पिता द्वारा डॉक्टर बनाने के सपने को पूरा करने के लिए अपने सारे सपनों से हाथ धो बैठता है| 'कैसी आगी लगाई' के लिए असग़र वजाहत को कथा यू.के सम्मान प्राप्त हुआ है| इनके उपन्यासों में जीवन की विशद व्याख्या एवं विस्तार है और सभी अंतर्विरोधों के बीच मानव-जीवन और श्रेष्ठता के कलात्मक संकेत देखने को मिलते हैं|

उपन्यास लेखन की आवश्यकता एवं योग्यता पर उनका द्रष्टिकोण सुनिश्चित है| वह कहानी को पीट-पीट कर उपन्यास बनाने के पक्षधर बिल्कुल भी नहीं हैं| हालांकि उनका मानना है कि लेखक जो कुछ उपन्यास में लिख सकता है वो कहानी में लिखना संभव नहीं है और ना ही वो किसी प्रकार के समाजशास्त्रीय अध्ययन को उपन्यास मानने के पक्ष में हैं| उनके अनुसार कहानी से ज़्यादा स्वतंत्रता कभी-कभी लेखक को उपन्यास में प्राप्त होती है| उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन के विषय में वो कहते हैं-"आदिवासियों पर उपन्यास, दलितों पर उपन्यास, अंचलों पर उपन्यास अर्थात उपन्यास न हुआ कोई समाजशास्त्रीय अध्ययन हो गया| मैं तो बिलकुल भी नहीं कहना चाहता कि उपन्यास समाजशास्त्रीय अध्ययन नहीं होता|लेकिन

अवश्य ज़ोर देकर कहना चाहता हूँ कि समाजशास्त्रीय अध्ययन उपन्यास नहीं होता| जहाँ जीवन का ताप न हो, न कला|जहां सहजता और जटिलता न हो, जहां जीवन की भट्टी में पक्के विचार न हो, जहाँ व्यापक जीवन की गतिशीलता न हो, जहाँ उत्कृष्ठ प्रतिभा न हो, अबाध गति से भाषा अपना रास्ता न बनाती हो, जहाँ व्यक्ति और समाज के मर्म तक पहुँच कर वापस आने की कला न हो, जहाँ व्यक्त और अव्यक्त के बीच के बीच की दूरी न मिट गयी हो, वहां उपन्यास नहीं होता|"[2]

**आलोचक के रूप में :**

आलोचना के क्षेत्र में भी असग़र वजाहत ने अपनी प्रतिभा को दर्शाया है |इनके प्रमुख आलोचनात्मक ग्रंथों में 'हिंदी उर्दू की प्रगतिशील कविता' और 'हिंदी कहानी: पुनर्मूल्यांकन' का नाम लिया जा सकता है |इसके अतिरिक्त इन्होंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न सामजिक मुद्दों को लेकर आलोचनात्मक द्रष्टिकोण से अपनी आवाज़ उठायी है |

असग़र वजाहत ने अपने समकालीन साहित्यकारों एवं साहित्यिक रचनाओं को लेकर आवश्यकतानुसार समय-समय पर टिपण्णी भी की है |यशपाल के समाजवादी मन को लेकर वह लिखते हैं-"शहर का मज़दूर वर्ग जो हिंदी कथा सहित्य से बहिष्कृत था, यशपाल के साहित्य में अपनी पूरी गरिमा एवं सार्थक भूमिका के साथ आया है | मध्यवर्ग या ग्रामीण जीवन प्रेमचंद की विशेषज्ञता है तो शहर का मज़दूर वर्ग पहली बार यशपाल के साहित्य की पहचान है |इस मज़दूर वर्ग में गतिशीलता है |उसकी एतिहासिक भूमिका को यशपाल अच्छी तरह पहचानते हैं और वे यह भी जानते हैं कि इस वर्ग में भटकाव की कौन-सी दिशाएँ हो सकती हैं |यही कारण है कि

---

[2]असग़र वजाहत-जहां व्यक्ति और व्यक्ति की दूरी मिट गयी हो वहां उपन्यास नहीं होता-हंस जनवरी1999-प्रष्ठ110

यशपाल के साहित्य में मजदूर वर्ग सम्भावना और सीमाओं के साथ चित्रित हुआ है |"[3]

असग़र वजाहत ने 'भारतीय मुसलमान: वर्तमान और भविष्य' और 'प्रवासी साहित्य' जैसे सामजिक मुद्दों के लिए लिखते रहे हैं| इसके अतिरिक्त असग़र वजाहत ने कथाकार भीष्म सहनी के रचनात्मक व्यक्तितत्व को केंद्र में रखकर उनका एक साक्षात्कार भी लिया है | इन्होंने राही मासूम रज़ा से अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय में हुई बात-चीत के कुछ अंशों को प्रो. कुंवरपाल सिंह के साथ बांटा है जिसे उन्होंने अपनी पुस्तक 'राही और उनका रचना संसार' में संग्रहित किया है साथ ही इस पुस्तक में असग़र वजाहत और जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति सय्यद शाहिद मेहंदी के बीच की वार्तालाप भी संगृहीत है |

**अनुवादक के रूप में:-**

अनुवाद के क्षेत्र में भी असग़र वजाहत ने अपनी प्रतिभा एवं प्रतिष्ठा के झंडे गाड़े हैं| इन्होंने कुर्रतुलएन हैदर के उर्दू उपन्यास 'आखिरी शब के हमसफ़र' का हिंदी में 'निशांत के सहयात्री' नाम से अनुवाद किया| यह उपन्यास 1989 में ज्ञानपीठ द्वारा पुरस्कृत है और इसका अनुवाद भी ज्ञानपीठ द्वारा सम्पादित है|असग़र वजाहत ने भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अनेक कहानियों एवं लेखों का अंग्रेजी, रूसी, हंगेरियन तथा उज़बेक आदि विदेशी भाषाओं में कतिपय रचनाओं का अनुवाद एवं प्रकाशन किया| प्रो. मुहम्मद हस्सन के आलोचनात्मक ग्रन्थ का 'नज़ीर अकबराबादी'नाम से अनुवाद करने के अतिरिक्त 'न्यू राइटिंग इन इंडिया' शीर्षक से हिंदी कविताओं एवं कहानियों के अंग्रेजी अनुवाद का 'पेंग्विन' में प्रकाशन किया|

**पत्रकार के रूप में:-**

सन १९६८ से असग़र वजाहत नियमित रूप से एक पत्रकार के रूप में हिंदी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं जैसे-'हिंदुस्तान दैनिक',

---

[3]यशपाल:पुनर्मूल्यांकन – प्रो. कुंवरपाल सिंह-प्रष्ठ 144

‘दहरा दैनिक’, ‘नव भारत टाइम्स’, ‘जनसत्ता’, ‘हंस’, ‘कथादेश’, ‘पहल’, ‘वर्तमान साहित्य’ आदि मेंसक्रीय रूप से लिखते रहे हैं| इसके अतिरिक्त असग़र वजाहत 2007 में तीन महीनों के लिए bbc hindi के अतिथि संपादक थे|

**टेलीविज़न लेखक के रूप में :**

असग़र  वजाहत ने अपनी पुस्तक ‘टेलीविज़न लेखन’ में दूरदर्शन लेखन की विभिन्न पद्धतियों के व्यावहारिक पक्षों को उदाहरण समेत मित्रवत शिक्षक की भाँती समझाया है| असग़र वजाहत स्वयं एक सफल पटकथा लेखक हैं जिन्होंने अपनी रचनात्मक प्रतिभा, बुनियादी जानकारी, अभियास एवं अनुशासन द्वारा दूरदर्शन की दुनिया में एक सफल पटकथा लेखक के रूप में अपना नाम कमाया| इन्होंने दूरदर्शन के अतिरिक्त कई अन्य ती.वी चैनलों के लिए एक दर्जन से अधिक कार्यक्रम लिखे हैं| प्रसिद्ध धारावाहिक ‘बूँद-बूँद’ में असग़र वजाहत आदिवासी जीवन से जुड़ी सभी कड़ियों को लोगों के सामने लाने में सफल हुए हैं| इस धारावाहिक को लोगों ने काफी सराहा| दूरदर्शन लेखन के सम्बन्ध में असग़र वजाहत का विचार है कि आधुनिक जनसंचार पद्धतियों के विकास ने दृश्य-श्रव्य को अभिव्यक्ति का सरल एवं सशक्त माध्यम बना दिया है|

टेलीविज़न से जुड़ी अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक ‘टेलीविज़न लेखन’ में इन्होंने टेलीविज़न लेखन की संरचना और निर्माण की सभी प्रक्रियाओं एवं प्रविधियों के वर्णन के साथ-साथ महत्वपूर्ण और चर्चित पटकथाओं के अंश भी दिए हैं|

**यात्रावृतांत :**

असग़र वजाहत ने देश-विदेश की अनेक यात्राएँ की हैं और अपने असंख्य लेखों में इन्होंने उन यात्राओं के बारे में लिख कर हिंदी यात्रा-साहित्य में भी अपना नाम जोड़ दिया| ‘चलते तो अच्छा था’ उनकी ईरान यात्रा पर आधारित है और ‘इस पतझड़ में आना’ हंगरी, बुदापैश्त की यात्रा पर आधारित है| इन्होंने केवल

यात्रा का आनंद ही नहीं लिया बल्कि 'चलते तो अच्छा था' में ईरान के समाज, संस्कृति और इतिहास को समझने का प्रयास भी किया है| 'इस पतझड़ में आना' में बुदापैश्त की प्राकृतिक सुन्दरता, सभ्यता, संस्कृति, रीति-रिवाज और वहां के लोगों तथा पतझड़ में वहां की अति सुन्दर घाटियों के बारे में अपने अनुभवों को पाठकों के साथ बांटा है|

असग़र वजाहत आठवें दशक के महत्वपूर्ण कथाकार हैं जिन्होंने मध्यवर्गीय जीवन के साथ गरीबी रेखा से नीचे जी रहे लोगों की ज़िन्दगी पर अपनी कलम चलाई है| उन्होंने अपने आकर में छोटी-छोटी किन्तु संदेश में मोटी कहानियों, उपन्यासों, नाटकों की रचना की है और विद्रूपता, अमानवीयता एवं सांप्रदायिक उन्माद में पागल मनुष्य पर अपनी लेखनी चलाई है| निष्कर्षत: असग़र वजाहत के ब्लॉग पर लिखा उनका यह रचनात्मक परिचय कितना सटीक है-" भारतीय समाज की उन आधारभूत विसंगतियों को असग़र वजाहत का लेखन सहजता से अभिव्यक्त करता है, जिन्हें हम जातिवाद, असमानता और दमन के रूप में जानते हैं|उनकी रचनायें अपनी विषयवस्तु में ही नहीं बल्कि प्रस्तुतीकरण में भी भिन्न हैं|"[4]उन्होंने चाहे कुछ भी लिखा हो पर उनका एक ही उद्देश्य रहा है मनुष्यता अर्थात इंसानियत| वह हर जगह केवल इंसानी फितरत की बात करते दिखाई देते हैं|

---

[4] Asgharwajahat.blogspot.com